हिंदी स्नातक प्रतिष्ठा-भाग 1 के लिए

पेज - 1

दिनांक - 22.4.2020

नाटक विषय:- 'चन्द्रगुप्त' - नाटककार जयशंकर प्रसाद

छात्र - छात्राओं !

उपर्युक्त नाटक के अध्ययन के लिए पहली आवश्यकता है कि हम यह जानें कि नाटक क्या है ?

यह साहित्य की सबसे श्रेष्ठ विधा है, जिसे दृश्य काव्य कहा जाता है। तात्पर्य यह कि वैसा काव्य जिसे देखा जा सके। संस्कृत में 'काव्य' शब्द का प्रयोग समस्त साहित्य के लिए किया जाता था जिसे हम 'काव्यशास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्' वाले श्लोक में देख सकते हैं। यहाँ काव्यशास्त्र से तात्पर्य साहित्य की सभी विधाओं से है जिसमें कविता, कहानी, उपन्यास, प्रबन्ध काव्य, खंड काव्य, नाटक, एकांकी सभी आ जाते हैं। बाद में हिंदी तक आते-आते काव्य से तात्पर्य कविता एवं अन्य काव्य रूपों से रह जाता है।

दृश्य काव्य पर विचार करने के पूर्व एक बात का स्मरण रखना जरूरी है कि काव्य से ही रस निष्पत्ति होती है और यही रस या आनन्द काव्य की आत्मा है। ऐसे काव्य का दृश्यत्व और महत्त्वपूर्ण हो जाता है, इसलिए यह साहित्य की सर्वश्रेष्ठ विधा है। यहाँ देखना और सुनना दोनों होता है यानी दृश्य काव्य के भीतर ही श्रव्य काव्य समाहित होता है। नाटक के अभिनय एवं प्रस्तुतिकरण में इसे सहज ही महसूस किया जा सकता है।

अब विचारणीय यह हो जाता है कि नाटक किसे कहेंगे ? दरअसल मूलतः नाटक अनुकरण है। इसमें पूरी अवस्था का अनुकरण होता है। तथा दूसरी परिभाषा के अनुसार भावों का अनुकरण भी होता है। इसे निम्न रूप से देखें :—

'अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्' - अर्थात् अवस्था की अनुकृति को नाटक कहते हैं। तथा 'भावानुकृतिर्नाट्यम्' में स्पष्ट है कि भावों की अनुकृति को नाटक कहते हैं। मेरी दृष्टि में नाटक के लिए दोनों ही उक्तियाँ अनिवार्य हैं। इस रूप में विचारणीय यह है कि नाटककार जो आलेख के रूप में नाटक लिखता है उसका अनुकरण अभिनेता करता है और अपने अभिनय कौशल से वह दर्शकों तक नाटककार के विचारों को प्रेषित करता

है। ऐसा अभिनय करते समय दर्शकों को पूर्णतयः विश्वास होना चाहिए कि रंगमंच पर उपस्थित व्यक्ति नाटक में वर्णित मूल पात्र ही है। जरा भी दर्शकों को लगे कि रंगमंच पर उपस्थित या बोलता हुआ व्यक्ति और नाटक में वर्णित पात्र में अंतर है तो दर्शक नाटककार द्वारा अपेक्षित प्रभाव ग्रहण नहीं कर सकेंगे। इसे एक उदाहरण से समझा जाय।

आजकल देश में लॉकडाउन के कारण पर दूरदर्शन रामानंद सागर द्वारा निर्देशित रामायण धारावाहिक दिखलाया जा रहा है। हम सभी यह जानते हैं कि राम की भूमिका निभानेवाला कलाकार अरुण गोविल भारतीय वर्तमान सिने जगत का कलाकार है। परन्तु जब वह राम की भूमिका में पर्दे पर दिखता है तब कभी यह महसूस नहीं होता कि वह भगवान राम नहीं है। कई बार तो ऐसा भी देखा जाता है कि अधिकांश नर-नारियाँ धारावाहिक शुरू होते ही प्रणाम की मुद्रा में आ जाते हैं। यथार्थ है कि अरुण गोविल वह होता है, भगवान नहीं। कहने का तात्पर्य यह कि नाटक में अवस्था-देश-दृश्य, रंग सज्जा, प्रकाश व्यवस्था आदि के कारण कलाकारों द्वारा ऐसा अनुकरण किया जाता है कि हम भूल जाते हैं कि हम घर में बैठे धारावाहिक देख रहे होते हैं। इसी तरह राम की काया वाक्-भंगिमा के पूरी तरह अनुकरण के कारण ही राम के दुःख से दुःखी तथा उनके सुख में हम सुख की अनुभूति करते हैं। यहीं साधारणीकरण की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और दर्शक-दीर्घा में बैठा हुआ व्यक्ति अपने को अपने भावों के अनुसार कभी राम के रूप में देखने लगता है तो कभी अन्य पात्रों के रूप में भी है। कहने का तात्पर्य है कि नाटक में मूलतः अनुकरण होता है वह अवस्था का भी होता है और भावों का भी। भारतीय नाट्यशास्त्र के अनुसार नाटक में मूलतः तीन तत्त्व होते हैं — वस्तु, नेता और रस। जबकि पाश्चात्य नाट्य समीक्षक छः तत्त्व मानते हैं। इस पर विवेचन अगले दिन के वर्ग में होगा।

रमेश
हिन्दी विभाग
एस० एस० कॉलेज, जहानाबाद।